University of Pune

Revised Syllabus for the M.A.
Program : M.A.
Course : HINDI
Semester III & IV

[As Per Credit Based Semester and Grading System with effect from the Academic year 2014-2015]

M. A. (HINDI-Part-I)
Credit and Semester system (CSS)

Revised syllabus will be implemented with effect from the academic year 2013-2014

Implementation of Credit and Semester System at PG Centers

1-The post-graduate degree will be awarded to students who obtain a total credit as follows:

Sr. No.	Name of the Faculty	Total credits	Average credits per semester
1	Faculty of Arts & Fine Arts, Social Sciences,Commerce, Education,Physical Education, Law	64	16

2-One credit will be equivalent to 15 clock hours of teacher-student contact per semester. There will be no mid-way change allowed from CSS to non-credit (external) system or vice versa.

One Credit=15 clock hours = 15 Hrs X 04 =60 clock hours (Per Paper)

3- Students have to opt for minimum 75% (48credits) credits from Hindi subject and remaining 25 % (16 credits) can be opted from either subjects or faculty.

Examination Rules:

1. Assessment shall consist of
   a) In-semester ------continuous assessment = 50% Marks
   b) End-semester assessment=50% Marks
2-The teacher concerned shall announce the units for which each in-semester assessment will take place. However, the end semester assessment shall cover the entire syllabus prescribed for the course.

3-An in-semester assessment of 50% marks should be continuous and at least two tests should be conducted for full course of 4 credits and a teacher must select a variety of procedures for examination such as:

i.Written Test and/or Mid Term Test (not more than one or two for each course)
ii. Term Paper;
iii. Journal/Lecture/Library notes;
iv. Seminar presentation;
v. Short Quizzes;
vi. Assignments;
vii. Extension Work;

viii. An Open Book Test (with the concerned teacher deciding what books are to be allowed for this purpose) or

ix. Mini Research Project by individual student or group of students

The concerned teacher in consultation with the Head of the PG Department shall decide the nature of questions for the Unit Test.

4- Semester end examination for remaining 50% marks will be conducted by the University of Pune.

5- The student has to obtain 40 % (40/100) marks in the combined examination of In Semester assessment and Semester-End assessment with a minimum passing of 30 % (15/50)in both these separately.

6- To pass the degree course, a student shall have to get minimum aggregate 40% marks (E and above on grade point scale) in each course.
(Please see the table on grade point scale if require)

7-If a student misses an internal assessment examination he/she will have a second chance with the permission of the Principal in consultation with the concerned teacher. Such a second chance shall not be the right of the student.

8- Internal marks will not change. A student cannot repeat Internal Assessment. In case she/he wants to repeat internal assessment she/he can do so only by registering for the said courses during the 5^{th} / 6^{th} semester and onwards up to 8^{th} semester.

9- Students who have failed semester-end exam may reappear for the semester-end examination only twice in subsequent period. The student will be finally declared as failed if she\he does not pass in all credits within a total period of four years. After that, such students will have to seek fresh admission as per the admission rules prevailing at that time.

10- A student cannot register for the third semester, if she/he fails to complete 50% credits of the total credits expected to be ordinarily completed within two semesters.

11-There shall be Revaluation of the answer scripts of Semester-End examination but not of internal assessment papers as per Ordinance no.134 A & B.

12- While marks will be given for all examinations, they will be converted into grades. The semester end grade sheets will have only grades and final grade sheets and transcripts shall have grade points average and total percentage of marks (up to two decimal points). The final grade sheet will also indicate the PG Center to which the candidate belongs.

Assessment and Grade point average:

1- The system of evaluation will be as follows: Each assignment/test will be evaluated in terms of grades. The grades for separate assignments and the final (semester-end) examination will be added together and then converted into a grade and later a grade point average. Results will be declared for each semester and the final examination will give total grades and grade point average.

2- Marks/Grade/Grade Point

Marks	Grade	Grade Point
100 to 75	O: Outstanding	06
74 to 65	A: Very Good	05
64 to 55	B: Good	04
54 to 50	C: Average	03
49 to 45	D: Satisfactory	02
44 to 40	E: Pass	01
39 to 0	F: Fail	00

3. Final Grade Points:

Grade Points	Grade
05.00-6.00	O
04.50-04.99	A
03.50-04.49	B
02.50-03.49	C
01.50-02.49	D
00.50-01.49	E
00.00-00.49	F

पुणे विश्वविद्यालय
एम.ए. हिंदी पाठ्यक्रम
सत्र (सेमिस्टर) श्रेयांक/कर्मांक पद्धति
(शैक्षिक वर्षः 2014–2015 से)

(प्रस्तुत पाठ्यक्रम की रचना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली की ''मॉडेल पाठ्यचर्या'' के आलोक में की गई है।)

1. एम.ए. हिंदी तृतीय सत्र और चतुर्थ सत्र के इस पाठ्यक्रम का अध्ययन व अध्यापन एक साथ जून, 2014 से आरंभ होकर मई–जून 2017 तक की परीक्षा के लिए होगा।
2. संपूर्ण पाठ्यक्रम का विभाजन दो सत्रों (एक वर्ष) के लिए होगा। विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्क्रम में से तृतीय सत्र के लिए प्रश्नपत्र 9 से 12 तक और चतुर्थ सत्र के लिए प्रश्नपत्र 13 से 16 तक का अध्ययन करना होगा।
3. 'संपूर्ण हिंदी' विषय लेने वाले विद्यार्थियों के लिए सामान्य स्तर और विशेष स्तर के प्रश्नपत्रों का अध्ययन करना होगा। गौण विषय के रूप में हिंदी का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को तृतीय सत्र में प्रश्नपत्र 9 और चतुर्थ सत्र में 13 का अध्ययन करना होगा।
4. प्रश्नपत्र 10,11,12,14,15,16 विशेष स्तर के रहेंगे। इनमें से प्रश्नपत्र 12 और प्रश्नपत्र 16 के अंतर्गत 3–3 विकल्प रखे गए हैं। विद्यार्थियों को इनमें से प्रतिसत्र किसी एक ही वैकल्पिक प्रश्नपत्र का चयन करना होगा।
5. किसी विशेष विषय में विशेषता प्राप्त करने के लिए प्रश्नपत्र 12 और प्रश्नपत्र 16 के अंतर्गत 3–3 विकल्प रखे गए हैं। विद्यार्थी अपने अध्ययन केंद्र में पढ़ाए जानेवाले विकल्पों में से किसी एक ही विकल्प का अध्ययन कर सकता है।

महत्वपूर्ण सूचनाएँः

<u>जून 2014</u> से (50 : 50 पैटर्न)

तृतीय/चतुर्थ सत्र

कुलः 60 तासिकाएँ (प्रत्येक इकाई के लिए 15 घंटे)

प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए श्रेयांक/कर्मांक		= 04
दोनों सत्रों के लिए चार–चार अंतर्गत परीक्षाएँ होंगी	–	50 अंक
सत्रांत परीक्षा	–	50 अंक
कुल	–	100 अंक

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

- छात्रों में साहित्य को समझने, उसका आस्वादन करने तथा मूल्यांकन करने की दृष्टि बढ़ाना।
- हिंदी साहित्य की प्राचीन व आधुनिक गद्य, पद्य विधाओं का तात्विक परिचय कराना।
- साहित्यिक प्रवृत्तियों के संदर्भ में विभिन्न साहित्य विधाओं के विकासक्रम का परिचय देना।
- साहित्य कृतियों का विविध दृष्टियों से विवेचन–विश्लेषण, आस्वादन तथा समीक्षा करने की दृष्टि देना।
- साहित्यकारों के साहित्यिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय कराना तथा साहित्य के लिए उनके योगदान पर प्रकाश डालना।
- आधुनिक काव्यधाराओं में विशेष कवि एवं नई कविता का अध्ययन कराना।
- हिंदी साहित्य का इतिहास, उद्भव एवं विकास और प्रवृत्तियों का विश्लेषण तथा मूल्यांकन के प्रति अभिरूचि निर्माण करना।
- भाषाविज्ञान, अनुवादविज्ञान, अनुसंधान कार्य, लोकसाहित्य, जनसंचार माध्यम और हिंदी, भारतीय साहित्य, आलोचना प्रणालियाँ आदि विषयों के अध्ययन के लिए छात्रों को प्रोत्साहन देना।
- हिंदी भाषा की व्यावहारिक उपयोगिता का परिचय देना।
- छात्रों की साहित्य संबंधी अभिरूचि तथा आस्वादन क्षमता में अभिवृद्धि करना।
- छात्रों को जनसंचार एवं इलैक्ट्रानिक मीडिया में हिंदी की उपादेयता तथा सूचना प्रौद्योगिकी के नए क्षेत्र में हिंदी की विकास यात्रा की जानकारी देकर उनमें अभिरूचि निर्माण करना।

• अंतर्गत परीक्षा पद्धतिः

इन दो सत्रों में चार–चार अंतर्गत परीक्षाएँ ली जाएँ, वह कुल 50 अंकों की होगी। उसके लिए निम्न परीक्षा पद्धतियों में से किन्हीं चार के (विभाग प्रमुख एवं विषय शिक्षक के अनुसार) आधार पर मूल्यांकन किया जाएः–

अ. क्र	परीक्षा	विषय
1.	स्वाध्याय– 02 श्रेयांक– 01 अंक– 5+5– कुल अंक– 10	किसी एक इकाई पर प्रश्न हो
2.	मौखिक परीक्षा– श्रेयांक–01 अंक– 10	चारों इकाईयों पर प्रश्न पूछे जाए
3.	प्रतियोगिता/स्पर्धा परीक्षा– श्रेयांक–01, अंक– 10	चारों इकाईयों पर प्रश्न पूछे जाए
4	विषय/संगोष्ठी/सेमीनार प्रस्तुतीकरण – श्रेयांक–01 अंक– 10	उपर्युक्त किसी एक इकाई पर प्रस्तुतीकरण लिया जाए
5.	लघु प्रकल्प/अनुसंधान कार्य/प्रोजेक्ट – श्रेयांक–01 अंक– 10	दिए गए इकाई पर प्रश्न हो
6.	अनिवार्य – लिखित परीक्षा – श्रेयांक–01 अंक– 15	किसी एक इकाई पर प्रश्न हो
7.	पुस्तक परीक्षण– श्रेयांक–01 अंक– 10	किसी एक इकाई के विषय पर
8.	साहित्यिक पत्रिका/पुस्तक आकलन/रस ग्रहण, अंक– 10	चारों इकाइयों पर
9.	फील्ड वर्क / अध्ययन यात्रा अंक– 10	चारों इकाइयों पर
10.	उपस्थिति को 05 अंक दे सकते हैं।	संपूर्ण सत्र की कुल उपस्थिति देखकर.....।

- उपर्युक्त किन्हीं चार परीक्षा पद्धतियों का अवलंब करना अनिवार्य होगा। उसमें लिखित परीक्षा अनिवार्य होगी। प्रत्येक श्रेयांक/क्रेडीट 10 तथा 15 अंकों का रहेगा।

एम.ए.(हिंदी) तृतीय सत्र
प्रश्न पत्र 9 : सामान्य स्तर – आधुनिक काव्य– 1
(महाकाव्य तथा खंडकाव्य)

उद्देश्यः

1. छात्रों को आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियों का परिचय कराना।
2. छात्रों को आधुनिक काल के प्रबंध और मुक्तक काव्य के तात्विक स्वरूप की जानकारी देना।
3. आधुनिक युग में इन काव्य प्रकारों के विकासक्रम का परिचय देना।
4. छात्रों को आधुनिक काव्य प्रकारों के तात्विक स्वरूप एवं विकासक्रम के परिप्रेक्ष्य में रचनाओं के आस्वादन,अध्ययन और मूल्यांकन की दृष्टि देना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन
5. परिचर्चा।
6. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

–: पाठ्यक्रम :–

(1) **कामायनी : जयशंकर प्रसाद**

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

केवल 'चिंता', 'श्रद्धा' 'इड़ा' तथा 'आनंद' सर्गों का अध्ययन

अध्ययनार्थ विषय :

1. 'कामायनी' की कथा में इतिहास और कल्पना
2. 'कामायनी' में चरित्र चित्रण
3. 'कामायनी' में रूपक तत्व
4. 'कामायनी' का महाकाव्यत्व
5. 'कामायनी' की दार्शनिकता
6. 'कामायनी' का कला पक्ष–भाषा, अलंकार, छंद विधान

श्रेयांक/कर्मांक = 02

(2) **गोपा गौतम : जगदीश गुप्त**

प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली

अध्ययनार्थ विषयः

1. खंडकाव्य का स्वरूप और विशेषताएँ
2. गोपा गौतम खंडकाव्य की कथावस्तु

3. गोपा गौतम खंडकाव्य का चरित्र–चित्रण
4. गोपा गौतम खंडकाव्य का उद्देश्य
5. गोपा गौतम खंडकाव्य में आधुनिकबोध
6. गोपा गौतम खंडकाव्य में चित्रित वातावरण
7. गोपा गौतम खंडकाव्य का शिल्प तथा कला पक्ष
(भाषा, बिंब विधान, प्रतीक योजना और अलंकार)

श्रेयांक/कर्मांक = 02

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथः

1. कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन–डॉ.द्वारिकाप्रसादसक्सेना
2. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ – डॉ नगेंद्र
3. कामायनी चिंतन – विमलकुमार जैन
4. कामायनी : एक नवीन दृष्टि – प्रो. रमेशचंद्र गुप्त
5. कामायनी : इतिहास और रुपक –सुशीला भारती
6. कामायनी विमर्श– भगीरथ दीक्षित
7. कामायनी कला और दर्शन – राममूर्ति त्रिपाठी
8. कामायनी एक पुनर्विचार – गजानन माधव मुक्तिबोध
9. कामायनी पुनर्मूल्यांकन – डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी
10. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में महाभारत के पात्र– डॉ.जे.आर.बोरसे
11. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर – डॉ. संतोषकुमार तिवारी
12. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि – द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
13. मैथिलीशरण गुप्त के खंडकाव्यों का अनुशीलन– डॉ. योगिता हिरे
14. नई कविता– डॉ. देवराज
15. नई कविता– आ. नंददुलारे वाजपेयी
16. जगदीश गुप्त का काव्य विविध आयाम– डॉ. सुरेश शिंदे, अभय प्रकाशन, कानपुर
17. नई रचना और रचनाकार– डॉ. दयानंद शर्मा, अन्नपूर्णा प्रका., कानपुर
18. जगदीश गुप्त का काव्य चिंतन और सृजन– डॉ. सुजीतकुमार शर्मा, श्यामा प्रकाशन, इलाहाबाद
19. काव्य पंरपरा और नई कविता की भूमिका– डॉ. श्रीमती कमलकुमार, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली
20. नवधा– संपा. अज्ञेय, डॉ. जगदीश गुप्त, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ
21. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर– डॉ. संतोषकुमार तिवारी

एम.ए.(हिंदी) तृतीय सत्र

प्रश्न पत्र 10 : विशेष स्तर– भाषा विज्ञान

उद्देश्य :–

1. भाषा विज्ञान के अंगों एवं विभिन्न शाखाओं का परिचय देना।
2. भाषा विज्ञान के सैद्धांतिक पक्ष से अवगत कराना।
1. भारतीय आर्य भाषाओं के ऐतिहासिक विकास क्रम की जानकारी देना।
4. हिंदी के शब्द भंडार एवं व्याकरणिक स्वरूप से परिचित कराना।
5. हिंदी के शब्द–भेदों के विकास क्रम का विवरण देना।
6. हिंदी के विविध रूपों की जानकारी देना।
7. साहित्य के अध्ययन में भाषाविज्ञान की उपयोगिता स्पष्ट करना।
8. विकास के संदर्भ में देवनागरी लिपि की विशेष जानकारी देना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन
5. भाषा प्रयोगशाला में प्रयोग।
6. परिचर्चा तथा अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषयः

1. **भाषा की परिभाषा एवं स्वरूप**, भाषा के अभिलक्षण, भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार, भाषा विज्ञान का स्वरूप एवं व्याप्ति। भाषा विज्ञान के अध्ययन की दिशाएँ– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, और तुलनात्मक। भाषा की शाखाएँ – कोश विज्ञान, व्युत्पत्ति विज्ञान, लिपि विज्ञान, समाज भाषा विज्ञान, मानक हिंदी का भाषा वैज्ञानिक विवरण (रूपगत), भाषा–भूगोल का सामान्य परिचय।
2. **स्वन विज्ञान :–** स्वन विज्ञान का स्वरूप, स्वन विज्ञान की शाखाएँ –औच्चारिकी तथा
   श्रोतिकी, स्वन की परिभाषा और वर्गीकरण, स्वर वर्गीकरण– जिह्वा के व्यवहृत भाग, जिह्वा की उँचाई तथा होठों की आकृति के आधार पर/ मानस्वर, संयुक्त स्वर
   व्यंजन वर्गीकरण –स्थान, प्रयत्न और घोषत्व के आधार पर श्रुति, व्यंजन गुच्छ ।

स्वनिम विज्ञान :– स्वनिम की परिभाषा और स्वरूप, स्वनिम की विशेषताएँ, स्वन और
स्वनिम में अंतर, स्वनिमिक विश्लेषण।
स्वनिम के भेद – खंडात्मक, अधिखंडात्मक, स्वनिम, लिप्यंकन।

3. **रूप विज्ञान :–** रूप विज्ञान की परिभाषा और स्वरूप, रूपिम का स्वरूप, रूपिम के भेद –
संरचना की दृष्टि से – मुक्त, बद्ध, संपृक्त रूप । अर्थ की दृष्टि से – अर्थदर्शी (अर्थतत्व), संबंधदर्शी (संबंधतत्व) । खंडात्मकता की दृष्टि से – खंडात्मक और अधिखंडात्मक ।

श्रेयांक/कर्मांक = 02

1. **वाक्य विज्ञानः–** वाक्य की परिभाषा और स्वरूप, वाक्य संबंधी सिद्धांत– अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद। वाक्य विश्लेषण – उद्देश्य, विधेय, निकटस्थ अवयव । वाक्य विश्लेषण –मूलवाक्य, रूपांतरित वाक्य, आंतरिक संरचना, बाह्य संरचना । वाक्य के भेद –रचना, क्रिया और अर्थ के आधार पर।
2. **अर्थ विज्ञान** – अर्थ विज्ञान की परिभाषा और स्वरूप, शब्द और अर्थ का संबंध। अर्थ
बोध के साधन – पर्यायता, विलोमता, अनेकार्थतता । अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ और अर्थ परिवर्तन के कारण।
3. **भाषा विज्ञान और साहित्य** – साहित्य के अध्ययन में भाषा–विज्ञान के अंगों की उपयोगिता ।

श्रेयांक/कर्मांक = 02

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथः

1. भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान – डॉ. राजमल बोरा
3. भाषा विज्ञान की भूमिका–सैद्धांतिक विवेचन–डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा
4. भाषा विज्ञान के सिद्धांत – डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय
5. भाषा विज्ञान– सैद्धांतिक विवेचन – रवींद्र श्रीवास्तव
6. भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा– द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
7. भाषा विज्ञान और भाषाशास्त्र – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
8. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा – डॉ. केशवदेव रूपाली
9. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा – डॉ. विश्वदेव त्रिगुणायत
10. भाषा विज्ञान की भूमिका – आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा
11. सामान्य भाषा विज्ञान – डॉ. बाबूराम सक्सेना
12. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. कृपाशंकर सिंह
13. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत – डॉ. रामकिशोर शर्मा
14. भाषा और भाषा विज्ञान – डॉ. तेजपाल चौधरी
15. भाषा–ब्लूमफील्ड (अनुवादक– डॉ. विश्वनाथ प्रसाद)
16. हिंदी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारीच
17. हिंदी भाषा का उद्भव और विकास– डॉ. उदयनारायण तिवारी
18. हिंदी का उद्भव, विकास और रूप – डॉ. हरदेव बाहरी
19. हिंदी की ग्रामीण बोलियाँ – डॉ. हरदेव बाहरी
20. हिंदी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप–डॉ.अंबाप्रसाद'सुमन'
21. हिंदी भाषा – कैलाशचंद्र भाटिया
22. हिंदी भाषा का इतिहास – डॉ. भोलानाथ तिवारी
23. भारतीय लिपियों की कहानी – गुणाकर मुले
24. नागरी लिपि रूप और सुधार – मोहन ब्रिज
25. नागरी लिपि का उद्भव और विकास– डॉ.ओमप्रकाश भाटिया
26. नागरी की लिपि संरचना – डॉ. भोलानाथ तिवारी
27. भारत की भाषाएँ – डॉ. राजमल बोरा
28. हिंदी भाषा का विकासात्मक इतिहास–डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
29. हिंदी भाषा का इतिहास और स्वरूप – डॉ. राममूर्ति शर्मा
30. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. केशवदत्त रूपाली
31. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा की भूमिका – त्रिलोचन पांडेय
32. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा का स्वरूप विकास – डॉ. देवेंद्र प्रताप सिंह
33. भाषा विज्ञान और हिंदी – डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'
34. भाषा शास्त्र तथा हिंदी भाषा की रूपरेखा– डॉ. देवेंद्रकुमार

शास्त्री
35. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. राजमणि शर्मा
36. भाषा विज्ञान प्रवेश और हिंदी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी
37. अभिनव भाषा विज्ञान – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
38. आधुनिक भाषा विज्ञान – कृपाशंकर सिंह/चतुर्भुज सहाय

एम.ए. (हिंदी) तृतीय सत्र

प्रश्न पत्र 11 : विशेष स्तर –

हिंदी साहित्य का इतिहास

(आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तक)

उद्देश्य :–

छात्रों को

1. युगीन परिस्थितियों और साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर हिंदी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन तथा नामकरण का परिचय देना।
2. आदिकालीन, भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों, प्रतिनिधि कवियों और उनकी रचनाओं से परिचित कराना।
3. जैन, सिध्द, नाथ और अपभ्रंश साहित्य के प्रभाव से अवगत कराना।
4. युगीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन
5. परिचर्चा।
6. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

स्वाध्याय के लिए विषयः

1. हिंदी साहित्य का इतिहास दर्शन
2. हिंदी साहित्य के इतिहास की लेखन परंपरा, पद्धतियाँ, प्रमुख इतिहास ग्रंथ, हिंदी के प्रमुख साहित्यिक केंद्र, संस्थाएं एवं पत्र–पत्रिकाएँ, सीमा निर्धारण, नामकरण तथा
3. हिंदी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण।

सूचना – उपर्युक्त तीन विषय केवल स्वाध्याय के लिए है।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

अध्ययनार्थ विषयः

आदिकाल :

1. आदिकाल का प्रारंभ – विविध आचार्यों की मान्यताएँ

2. आदिकाल के नामकरण के विविध आधार और विविध नाम – चारणकाल, सिद्ध सामंत काल, बीजवपन काल तथा वीरगाथा काल।
3. आदिकालीन पृठभूमि/परिस्थितियाँ – सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक और उनका तत्कालीन साहित्य पर प्रभाव।
4. सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य और जैन साहित्य का परिचय।
5. रासो काव्य की परंपरा – 'रासो' शब्द के विभिन्न अर्थ, रासो के प्रकार – जैन, रासो, धार्मिक रासो, वीर रासो ।
6. आरंभिक गद्य तथा लौकिक साहित्य।
7. कवि विद्यापति का साहित्यिक परिचय।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

भक्तिकाल :

1. भक्ति आंदोलन के उदय के सामाजिक – सांस्कृतिक कारण, वैष्णव भक्ति की सामाजिक – सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, आलवार संत, प्रमुख सम्प्रदाय और आचार्य, भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अंतःप्रादेशिक वैशिष्ट्य।
2. भक्तिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि – सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक।
   हिंदी संत काव्य : संत का वैचारिक आधार, प्रमुख निर्गुण संत कवि कबीर, नानक, रैदास, दादू, भारतीय धर्म साधना में संत कवियों का स्थान।
   हिंदी सूफी काव्य : सूफी काव्य का वैचारिक आधार, सूफी काव्य का स्वरूप और हिंदी के प्रमुख सूफी कवि।
3. सगुण भक्ति साहित्य और उसकी शाखाएँ– रामभक्ति विविध संप्रदाय, रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि, हिंदी कृष्ण काव्य : विविध संप्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, अष्टछाप, प्रमुख कृष्ण भक्त कवि और काव्य, भ्रमरगीत परम्परा, गीति परंपरा और हिंदी कृष्ण काव्य – मीरा, रसखान।
4. भक्तिकालीन साहित्य की सामाजिक उपादेयता – कबीर और तुलसीदास के संदर्भ में।
5. भक्तिकालीन नीति साहित्य का परिचय और रहीम।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

रीतिकाल :

1. रीतिकाल के मूल स्रोत, रीतिकाल की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक परिस्थितियाँ।
2. रीतिकालीन साहित्य पर संस्कृत साहित्य तथा भक्तिकालीन हिंदी साहित्य का प्रभाव।

3. रीतिकाल के विविध नाम और उनके आधार, रीतिकालीन साहित्य – रीतिबध्द, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त काव्य की विषयगत और शैलीगत प्रवृत्तियाँ।
4. रीतिकाल का श्रृँगारेतर साहित्य – भक्ति, वीर तथा नीति, रीतिकाल में लोक जीवन।
5. रीतिकालीन प्रमुख कवियों का परिचय– केशवदास, देव, चिंतामणि, सेनापति, मतिराम, पद्माकर, घनानंद।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथः

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – आ. रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – संपा. डॉ. नगेंद्र
3. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास– डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
4. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
5. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
6. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. श्यामचंद्र कपूर (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)
7. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
8. हिंदी साहित्य और उसकी प्रवृत्तियाँ – डॉ. गोविंदराम शर्मा
9. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. जयकिशनप्रसाद खंडेलवाल
10. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास – बाबू गुलाबराय
11. आधुनिक साहित्य का इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
12. हिंदी साहित्य की भूमिका – डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
13. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ. रामकुमार वर्मा
14. हिंदी गद्य : उद्भव और विकास – डॉ. उमेश शास्त्री
15. हिंदी साहित्य : एक परिचय – डॉ. त्रिभुवन सिंह
16. हिंदी साहित्य और संवेदना का इतिहास– डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
17. हिंदी रीति साहित्य – डॉ. भगीरथ मिश्र
18. रीतियुगीन काव्य – डॉ. कृष्णचंद्र वर्मा
19. रीतिकाव्य की भूमिका – डॉ. नगेंद्र
20. हिंदी रीतिकालीन पर काव्य संस्कृत काव्य का प्रभाव– डॉ. दयानंद शर्मा
21. आधुनिक हिंदी साहित्य का आदिकाल – श्री. नारायण चतुर्वेदी
22. हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ – डॉ. शिवकुमार शर्मा
23. हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास – डॉ. सभापति मिश्र
24. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. माधव सोनटक्के
25. हिंदी साहित्य का अद्यतन इतिहास – डॉ. मोहन अवस्थी
26. हिंदी साहित्य का सही इतिहास – डॉ. चंद्रभानु सोनवणे/ डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
27. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास – डॉ. सुमन राजे
28. हिंदी साहित्य की नवीन विधाएँ – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
29. हिंदी साहित्य का इतिहास : नए विचार नई दिशाएँ – डॉ. सुरेशकुमार जैन
30. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. सज्जनराम केणी
31. हिंदी साहित्य – डॉ. धर्मवीर भारती

एम.ए.(हिंदी) तृतीय सत्र

प्रश्न पत्र 12 : विशेष स्तर – वैकल्पिक

(सूचनाः अ, आ,इ में से किसी एक प्रश्नपत्र का अध्ययन करना है)

(अ) आधुनिक हिंदी आलोचना

उद्देश्य :–

छात्रों को :

1. आलोचना के स्वरूप से परिचित कराना ।
2. हिंदी आलोचना के विकास का परिचय देना ।
3. हिंदी के प्रमुख आलोचकों की आलोचना पद्धतियों से अवगत कराना ।
4. हिंदी आलोचकों के प्रदेय से परिचित कराना ।
5. छात्रों में आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कराना ।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा तथा परिचर्चा ।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन
5. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषयः

1. **आलोचना** : स्वरूप, उद्देश्य, आलोचना की प्रक्रिया ।
2. आलोचना और अनुसंधान, आलोचक के गुण ।
3. **हिंदी आलोचना का विकास क्रम**, हिंदी आलोचना और सर्जनशील साहित्य । हिंदी आलोचना में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी योगदान।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

4. **आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना पद्धति** : स्वरूप और विशेषता – हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।
5. **डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना पद्धति** : स्वरूप और विशेषता – हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

6. **डॉ. नंददुलारे वाजपेयी की आलोचना पद्धति** : स्वरूप और विशेषता – हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।
7. **डॉ. नगेंद्र की आलोचना पद्धति** : स्वरूप और विशेषता – हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।
8. **डॉ. रामविलास शर्मा की आलोचना पद्धति** : स्वरूप और विशेषताएँ, हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

9. **डॉ. नामवर सिंह की आलोचना पद्धति** : स्वरूप और विशेषताएँ, हिंदी आलोचना में उनका योगदान।

10. **समकालीन आलोचना की कतिपय अवधारणाएँ** : विडम्बना (आयरनी), अजनबीपन (एलियनेशन), विसंगति (एब्सर्ड), अंतर्विरोध (पैराडॉक्स), विखंडन (डीकन्स्ट्रक्शन)।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथः

1. हिंदी आलोचना : स्वरूप और प्रक्रिया – आनंदप्रकाश दीक्षित
2. आचार्य शुक्ल के समीक्षा सिद्धांत – डॉ. रामलाल सिंह
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना– डॉ. रामविलास शर्मा
4. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व और साहित्य– डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
5. आ. नंददुलारे वाजपेयीः व्यक्तित्व और साहित्य–डॉ.रामाधार शर्मा
6. हिंदी आलोचना का इतिहास – डॉ. रामदरश मिश्र
7. हिंदी आलोचना : उद्भव और विकास – भगवत स्वरूप मिश्र
8. हिंदी के विशिष्ट आलोचक – नंदकुमार राय
9. हिंदी आलोचना के आधार स्तंभ – डॉ. रामेश्वर खंडेलवाल
10. हिंदी की सैद्धांतिक समीक्षा – डॉ. रामाधार शर्मा
11. हिंदी की सैद्धांतिक आलोचना – डॉ. रूपकिशोर मिश्र
12. हिंदी समीक्षा : स्वरूप और संदर्भ – डॉ. रामदरश मिश्र
13. हिंदी आलोचना की परंपरा और आचार्य रामचंद्र शुक्ल – डॉ. शिवकुमार मिश्र
14. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी – संपा. विश्वनाथ तिवारी
15. डॉ. नगेंद्र के आलोचना सिद्धांत – नारायण प्रसाद चौबे
16. डॉ. रामविलास शर्मा – डॉ. विश्वनाथप्रसाद तिवारी
17. आलोचक रामविलास शर्मा – डॉ. नत्थन सिंह
18. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के अधुनातम संदर्भ– डॉ. सत्यदेव मिश्र
19. पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत विवेचन – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
20. काव्यशास्त्र – डॉ. सुधाकर कलावडे
21. साहित्य अध्ययन की दृष्टियाँ– संपा. डॉ. उदय भानु सिंह, डॉ. उदय प्रकाश
22. आधुनिकता बनाम उत्तर आधुनिकता– संपादक– डॉ. संजीव कुमार जैन तथा डॉ. मणिमोहन मेहता
23. आलोचना और आलोचना – देवीशंकर अवस्थी, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–2

एम.ए.(हिंदी) तृतीय सत्र
प्रश्न पत्र 12 : विशेष स्तर – वैकल्पिक
(आ) अनुवाद विज्ञान

उद्देश्य :–

छात्रों को :

1. अनुवाद की परिभाषा, स्वरूप, महत्व एवं व्याप्ति की जानकारी देना।
2. अनुवाद के विविध रूप तथा अनुवाद प्रक्रिया का परिचय देना।
3. अनुवाद के सामाजिक, सांस्कृतिक पक्ष से अवगत कराना।
4. अनुवाद के समय आनेवाली विभिन्न समस्याएँ तथा उनके समाधान से परिचित कराना ।
5. अनुवाद की क्षमता विकसित कराना ।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन
5. विविध भाषाओं की कृतियों के अनुवाद का अभ्यास ।
6. राजभाषा अधिकारियों के व्याख्यान ।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषय :

1. **अनुवाद का स्वरूप** : परिभाषा, महत्व एवं व्याप्ति, अनुवाद–कला या विज्ञान।
2. **अनुवाद प्रक्रिया** : मूलभाषा का पाठबोधन और व्याख्या, लक्ष्यभाषा में अभिव्यक्ति, अनुवाद की प्रक्रियागत स्थितियाँ – अर्थयोग; अर्थहानि; अर्थांतरण; पुनःसर्जन, अनुवाद कार्य में सहायक साधन– कोश, पारिभाषिक शब्दावली, संबंधित ग्रंथ, कम्प्यूटर आदि।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

3. **अनुवाद के प्रकार :**
   - अ. प्रक्रिया के आधार पर – शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, रूपांतरण ।
   - आ. गद्य–पद्य के आधार पर – गद्यानुवाद, पद्यानुवाद।
   - इ. विधा के आधारपर – नाट्यानुवाद, कथानुवाद आदि।

4. **अनुवाद और भाषा विज्ञान** : भाषाविज्ञान के अंग और अनुवाद, अनुवाद और रूपविज्ञान, अनुवाद और वाक्यविज्ञान, अनुवाद और अर्थविज्ञान।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

5. **वैज्ञानिक और तकनीकी सामग्री का अनुवाद** : स्वरूप, आवश्यकता, समस्याएँ, सीमाएँ।
6. **वाणिज्य और व्यापार तथा बैंक क्षेत्र की सामग्री का अनुवाद** : स्वरूप, आवश्यकता, समस्याएँ, सीमाएँ।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

7. **कम्प्यूटर अनुवाद** : आवश्यकता, समस्याएँ तथा सीमाएँ।
8. अनुवाद की समस्याएँ – मुहावरों और कहावतों का अनुवाद, काव्यानुवाद, नाट्यानुवाद।
9. **अनुवाद समीक्षाः** आवश्यकता और निकष तथा अनुवाद का अभ्यास– अ. विधा– कहानी, निबंध, कविता आदि।
   आ. साहित्येतर– बैंक, रेलवे, वाणिज्य, भूगोल, विज्ञान आदि।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथः

1. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा – डॉ. सुरेश कुमार
2. अनुवाद विज्ञान – भोलानाथ तिवारी
3. अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार – डॉ. एस. के. शर्मा
4. अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग – संपा. डॉ. नगेंद्र
5. अनुवाद : सिद्धांत एवं प्रयोग – डॉ. जी. गोपीनाथन
6. अनुवाद कला : सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
7. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ – डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव/डॉ कृष्णकुमार गोस्वामी
8. अनुवाद बोध – संपा. डॉ. गार्गी गुप्त
9. बिना चेहरे के लोग – मूल लेखक – रामनाथ चव्हाण, अनुवाद– प्रो. डॉ. वी. एन. भालेराव, शैलजा प्रकाशन, कानपुर
10. काव्यानुवाद की समस्याएँ : साहित्य का अनुवाद– डॉ. भोलानाथ तिवारी/महेंद्र चतुर्वेदी
11. अनुवाद भाषाएँ – समस्याएँ डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
12. शिवशाहीचा सूर्य – (मूल उपन्यास– पहला सूरज), लेखक– डॉ. भगवतीशरण मिश्र, अनुवाद– डॉ. पी. वी. कोटमे, स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे
13. अनुवाद और मशीनी अनुवाद – डॉ. वृषभप्रसार जैन
14. अनुवाद कला – डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
15. अनुवाद क्या है – डॉ. राजमल बोरा वाणी प्रकाशन, दिल्ली
16. अनुवाद विज्ञान और संप्रेषण – डॉ. हरीमोहन तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
17. हिंदी में व्यवहारिकता अनुवाद – डॉ. अलोक कुमार रस्तोगी
18. अनुवाद विज्ञान – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया

एम.ए.(हिंदी) तृतीय सत्र
प्रश्न पत्र 12 : विशेष स्तर – वैकल्पिक
(इ) जनसंचार माध्यम और हिंदी

उद्देश्य :–

छात्रों को :

1. जनसंचार के माध्यमों का स्वरूप, उद्देश्य, प्रकारों का परिचय देना।
2. संचार तकनीकी के स्वरूप तथा इतिहास से अवगत कराना।
3. जनसंचार माध्यमों की विविध भाषिक प्रयुक्तियों का परिचय देना।
4. हिंदी पत्रकारिता का परिचय देना।
5. मीडिया द्वारा हिंदी में हो रहे परिवर्तनों का वैश्विक स्तर के
6. परिप्रेक्ष्य में परिचय देना।
7. इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के संदर्भ में हिंदी भाषा के मानकीकरण का परिचय देना।
8. जनसंचार माध्यमों में काम करने की दृष्टि से छात्रों की क्षमता बढ़ाना।
9. पत्रकारिता का स्वरूप एवं उपयोजन की जानकारी देना।
10. पत्रकारिता के विविध आयामों से परिचित कराना।
11. पत्रकारिता प्रबंधन के संदर्भ में आवश्यक तथ्यों से अवगत कराना।
12. प्रेस के संदर्भ में भारतीय संविधान में समाविष्ट अधिकारों का ज्ञान कराना।

अध्यापन पद्धति

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन
5. जनसंचार क्षेत्र से संबंधित संस्थाओं की अध्ययन यात्रा ।
6. जनसंचार क्षेत्र से संबंधित विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषय :

1. **जनसंचार माध्यम** : स्वरूप, कार्य, उद्देश्य, सूचना–प्रौद्यौगिकी के विविध रूप, इलेक्ट्रानिक अंतर्ग्रथन।
2. **भारतीय संचार तकनीकी** : इतिहास, विकासमूलक तथा लोकतांत्रिक संचार, वैश्विकीकरण की प्रक्रिया और जनसंचार।

3. **जनसंचार माध्यमों के विविध हिंदी भाषा रूप** : समाचार, विज्ञापन, विज्ञान एवं अनुसंधान से संबंधित कार्यक्रम, जनशिक्षा, साक्षात्कार, सर्वेक्षण वृत्तांत, साहित्य प्रसारण, सामायिक कार्यक्रम, निवेदन, कृषि केंद्रित कार्यक्रम, बच्चों के कार्यक्रम, चर्चा विश्लेषण, खेल, संगीत, धार्मिक कार्यक्रम, सीधा प्रसारण आदि के हिंदी भाषा रूप।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

4. **जनसंचार माध्यम और हिंदी साहित्य** : जनसंचार माध्यमों में साहित्य की आवश्यकता, जनसंचार माध्यमों से संबंधित हिंदी साहित्य ।
5. **पत्रकारिता का स्वरूप,** विश्व पत्रकारिता का उदय, भारत में पत्रकारिता का आरंभ, हिंदी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध्द की हिंदी पत्रकारिता। हिंदी नवजागरण और सरस्वती पत्रिका।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

6. **पत्रकारिता के मूल तत्व** – समाचार संकलन तथा लेखन के मुख्य आयाम, समाचार पत्रों के विभिन्न स्तंभों की योजना। संपादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी खबर, अनुवर्तन (फालोआप) आदि की प्रविधि।
7. **प्रिंट पत्रकारिता और मुद्रणकला प्रूफ शोधन,** ले आउट तथा पुष्ट सज्जा, मुक्तप्रेस की अवधारणा, लोकसंपर्क तथा विज्ञापन। संपादन कला : सामान्य सिद्‌धांत शीर्षकीकरण, पृष्ठ विन्यास, आमुख और समाचार पत्र की प्रस्तुति प्रकिया, समाचार के विभिन्न स्रोत।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

8. **इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता** – रेडियो, टीवी, व्हिडीओ, केबल, मल्टीमीडिया और इंटरनेट पत्रकारिता।
9. **पत्रकारिता और साहित्य,** लघु पत्रकारिता, हिंदी पत्रकारिता के विकास में लघु पत्रिकाओं की भूमिका और समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता, हिंदी की महिला पत्रिकाएं एवं महिला स्तंभ, पत्रकारिता का सामाजिक दायित्व।
10. **भारतीय संविधान में प्रदत्त अधिकार–** मौलिक अधिकार, सूचनाधिकार एवं मानवाधिकार।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथः

1. जनमाध्यम प्रौद्योगिकी और विचारधारा – जगदीश्वर चतुर्वेदी
2. जनसंचार माध्यम : चुनौतियाँ और दायित्व– डॉ. त्रिभुवन राय (श्याम प्रकाशन, जयपुर)
3. जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र – जवरीमल्ल पारीख
4. हिंदी पत्रकारिता के इतिहास की भूमिका – जगदीश्वर चतुर्वेदी
5. मीडिया विमर्श – रामशरण जोशी
6. परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम – पूरनचंद्र जोशी
7. मीडिया और साहित्य – सुधीर पचौरी
8. साइबर स्पेस और मीडिया – सुधीर पचौरी
9. साहित्य का उत्तरकांड – सुधीर पचौरी
10. दूरदर्शन : संप्रेषण और संस्कृति – सुधीर पचौरी
11. दूरदर्शन : विकास से बाजार तक – सुधीर पचौरी
12. ब्रेक के बाद – सुधीर पचौरी
13. इक्कीसवीं सदी और हिंदी पत्रकारिता – अमरेंद्र कुमार
14. एक जनभाषा की त्रासदी – गिरिराज किशोर
15. सूचना समाज – जगदीश्वर चतुर्वेदी
16. हिंदी पत्रकारिता : स्वरूप और संदर्भ – डॉ. विनोद गोदरे
17. पत्रकारिता और जनसंचार – डॉ. ठाकुरदत्त 'आलोक' (वाणी प्रकाशन,दिल्ली)
18. प्रसार भारती प्रसारण नीति – सुधीर पचौरी (वाणी प्रकाशन,दिल्ली)
19. हिंदी पत्रकारिता का बृहत् इतिहास – डॉ. अर्जुन तिवारी (वाणी प्रकाशन,दिल्ली)
20. आधुनिक जनसंचार और हिंदी – प्रो. हरिमोहन (तक्षशिला, प्रकाशन, दिल्ली)
21. रेडिओ और दूरदर्शन पत्रकारिता – प्रो. हरिमोहन (तक्षशिला, प्रकाशन, दिल्ली)
22. दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी– डी.डी. ओझा, सत्यप्रकाश (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)
23. मास कम्युनिकेशन थ्योरी – मेक्कनिल डेनिश
24. जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
25. प्रयोजनमूलक हिंदी तथा मीडिया लेखन – संपा. प्राचार्य डॉ. बापूराव देसाई, विकास प्रकाशन, 110/138 मिश्रा पॅलेश, जवाहर नगर, कानपुर–208012
26. इंट्रोडक्शन ऑफ इन्फर्मेशन टेक्नोलॉजी इन इंडिया – संपा. अवरोल,दिनेश अशोक जैन
27. टेक्नोलॉजिकल चेंज इन द इन्फर्मेशन इकोनॉमी– मोंक पीटर

28. कम्प्यूटर गाइड – शशिकांत बाकरे
29. इंटरनेट एण्ड वर्ल्डवाइड वेब सिंफ्लीफाइड – रूथ मार
30. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता और रचनात्मक नवलेखन का अंतःसंबंध – डॉ ऋचा शर्मा
31. जनमाध्यम प्रौद्योगिकी और विचारधारा –जगदीश्वर चतुर्वेदी
32. जनसंचार माध्यम : चुनौतियाँ और दायित्व– डॉ. त्रिभुवन राय श्याम प्रकाशन,जयपुर
33. जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र– जवरीमल्ल पारीख
34. हिंदी पत्रकारिता के इतिहास की भूमिका– जगदीश्वर चतुर्वेदी
35. मीडिया विमर्श – रामशरण जोशी
36. परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम– पूरनचंद्र जोशी
37. मीडिया और साहित्य –सुधीर पचौरी
38. साइबर स्पेस और मीडिया – सुधीर पचौरी
39. साहित्य का उत्तरकांड – सुधीर पचौरी
40. दूरदर्शन : संम्प्रेषण और संस्कृति– सुधीर पचौरी
41. दूरदर्शन : विकास से बाजार तक – सुधीर पचौरी
42. ब्रेक के बाद – सुधीर पचौरी
43. इक्कीसवीं सदी और हिंदी पत्रकारिता – अमरेंद्र कुमार
44. एक जनभाषा की त्रासदी – गिरिराज किशोर
45. सूचना समाज – जगदीश्वर चतुर्वेदी
46. जनसंचार और पत्रकारिता : विविध आयाम– डॉ. ओमप्रकाश शर्मा

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र

प्रश्न पत्र 13 : सामान्य स्तर – आधुनिक काव्य– 2

(विशेष कवि कुँवर नारायण तथा नई कविता)

उद्देश्यः

1. छात्रों को आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियों का परिचय कराना।
2. छात्रो को आधुनिक काल के प्रबंध और मुक्त काव्य के तात्विक स्वरूप की जानकारी देना।
3. आधुनिक युग में इन काव्य प्रकारों के विकासक्रम से परिचित कराना।
4. छात्रों को आधुनिक काव्य प्रकारों के तात्विक स्वरूप एवं विकासक्रम के परिप्रेक्ष्य में रचनाओं के आस्वादन, अध्ययन और मूल्यांकन की दृष्टि देना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन
5. परिचर्चा।
6. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

(1) विशेष कवि कुँवर नारायण

संपा. डॉ. सुरेश बाबर तथा डॉ. नीला बोर्वणकर

प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, 21,दरियागंज ,नई दिल्ली

अध्ययनार्थ कविता :

1. चक्रव्यूह
2. जाड़ों की एक सुबह
3. अब की अगर लौटा तो
4. लगभग दस बजे रोज
5. कविता
6. भाषा की धस्त परिस्थितिकी में
7. कविता की जरूरत
8. महाभारत
9. अयोध्या – 1992
10. आठवीं मंजील पर
11. एक संक्षिप्त कालखंड में
12. नीम के फूल
13. स्पष्टीकरण
14. अमीर खुसरो
15. आजकल कबीरदास
16. रंगों की हिफ़ाजत
17. बाज़ारों की तरफ भी
18. शहर और आदमी
19. एक अजीब–सी मुश्किल में हूँ इन दिनों
20. काला और सफेद

अध्ययनार्थ विषयः

1. कुँवर नारायण के काव्य में आधुनिक बोध
2. कुँवर नारायण के काव्य की विशेषताएँ
3. कुँवर नारायण के काव्य में वैचारिकता

श्रेयांक/कर्मांक = 01

4. कुँवर नारायण के काव्य की भाषा

   कुँवर नारायण के काव्य का शिल्प

(2) नई कविता

संपा. डॉ. सुरेश बाबर तथा डॉ. अलका पोतदार

प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, 21,दरियागंज ,नई दिल्ली

अध्ययनार्थ कविः

अ. **लीलाधर जगूड़ी–**

1. पाटा
2. भरोसे की कविता
3. उदासी के ख़िलाफ़
4. डेढ़ रुपये की ताक़त
5. बीमारी जो गरीबी है
6. आधुनिक शब्द
7. एक और नामकरण

श्रेयांक/कर्मांक = 01

आ. उदय प्रकाश–

1. कायदा
2. वर्तमान को धन्यवाद
3. सहानुभूति की माँग
4. विद्वान लोग
5. सुनो कारीगर
6. माँ
7. पिता

इ.कात्यायनी–

1. बुजुर्ग राहगीर की कविता
2. आस्था का प्रश्न
3. गुड़ की डली

4. वे नहीं सोचते
5. आशावादी नागरिक की कविता
6. आम आदमी का प्यार
7. सौ साल कैसे जिये ?

ई. दामोधर मोरे

1. मेरी प्यारी आज़ादी
2. मुझे बरदास्त नहीं होता
3. युगधर्म
4. शायरी और आमलेट
5. पहरा
6. सावित्री से सावित्री तक
7. मौत का पैगाम

श्रेयांक/कर्मांक = 01

अध्ययनार्थ कविता के विषयः

1. नई कविता का अनुभूति पक्ष
2. नई कविता की शिल्प योजना
3. लीलाधर जगूड़ी के काव्य का कथ्य
4. लीलाधर जगूड़ी के काव्य का शैली पक्ष
5. उदय प्रकाश के काव्य की भावगत विशेषताएँ
6. उदय प्रकाश के काव्य की शिल्पगत विशेषताएँ
7. कात्यायनी के काव्य का भावपक्ष
8. कात्यायनी के काव्य का कलापक्ष
9. दामोदर मोरे के काव्य की संवेदना
10. दामोदर मोरे के काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष

श्रेयांक/कर्मांक = 01

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथ

1. कुँवर नारायण : नैतिक संवेदना का द्वंद्व– पूनम सिंह
2. कुँवर नारायण का काव्य–'कोई दूसरा नहीं' का समीक्षात्मक अध्ययन– पुष्पलता
3. आत्मजयी–चेतना और शिल्प– विजया शर्मा
4. कुँवर नारायण और उनका साहित्य– अनिल मेहरोत्रा
5. नई कविता का बौद्धिक परिप्रेक्ष्य–कुँवर नारायण और विजयदेव नारायण साही के विशेष संदर्भ में– गोरखनाथ पाण्डेय
6. कुँवर नारायण का रचना– संसार– एक समीक्षात्मक अनुशीलन– मिथलेश शरण चौबे
7. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर – डॉ. संतोषकुमार तिवारी
8. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि – द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
9. काव्य रूप संरचना : उद्भव और विकास – सुमन राजे
10. आधुनिक हिंदी काव्य में रूप विधाएँ – डॉ. निर्मला जैन
11. हिंदी राम काव्य का स्वरूप और विकास : बदलते युग बोध के परिप्रेक्ष्य में – डॉ. प्रेमचंद्र महेश
12. संसद से सड़क तक और गोलपीठा– प्रा. अनंत केदारे
13. कुँवर नारायण–संसार – संपादन– यतींद्र मिश्र
14. कुँवर नारायण–उपस्थिति – संपादन– यतींद्र मिश्र
15. तीसरा सप्तक – संपादक– अज्ञेय
16. कुँवर नारायण–पचास कविताएँ– वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
17. हिंदी के आधुनिक कविः व्यक्तित्व और कृतित्व – रवींद्र भ्रमर
18. समकालीन हिंदी कविता में आम आदमी –जोशी मृदुल
19. नई कविता का सौंदर्य बोध – डॉ.रेनू दीक्षित
20. अस्तित्ववादी स्वतंत्रता का प्रभामंडल और नई कविता– हनुमंतराय नीरव
21. नई कविता– पुरातन सूत्र – डॉ मानसिंह वर्मा
22. समकालीन हिंदी कविता – रवींद्र भ्रमर
23. नई कविता की प्रबंध–चेतना – डॉ महावीरसिंह चौहान
24. नया हिंदी काव्य और विवेचन –शंभुनाथ चतुर्वेदी
25. नई कविता – देवराज

26. आधनिक हिंदी काव्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन–डॉ बनवारीलाल द्विवेदी
27. सप्तक काव्य में व्यंग्य विधान – डॉ गिरीश महाजन
28. आधुनिक खंडकाव्यों में युगचेतना – डॉ एन डी पाटील
29. नागार्जुन के काव्य का अनुशीलन – डॉ. पूनम बोरसे
30. अज्ञेय से अरूण कमल – डॉ. संतोषकुमार तिवारी, भारती ग्रंथ निकेतन, दरियागंज, नई दिल्ली
31. आधुनिक कविता यात्रा – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद
32. आधुनिक कविता : प्रमुख वाद एवं प्रवृत्तियाँ – दुर्गाशंकर मिश्र, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर
33. आधुनिक काव्य सांस्कृतिक चेतना – डॉ. राजपाल शर्मा, पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली– 51
34. आधुनिक काव्य और संस्कृति – डॉ. भक्तराज शास्त्री, चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर
35. आधुनिक कविता : सिद्धांत और समीक्षा– विश्वंभरनाथ उपाध्याय, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
36. आधुनिक हिंदी कविता में काव्य चिंतन–डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, क्वॉलिटी बुक पब्लिकेशन, कानपुर
37. समकालीन हिंदी कविता और लीलाधर जगूड़ी–डॉ. शर्मिला सक्सेना, के. एल. पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद– 201102
38. समकालीन कवि डॉ. लीलाधर जगूड़ी – अंजली चौधरी, विद्याविहार, कानपुर
39. नई कविता पुरातन सूत्र– डासॅ. मानसिंह वर्मा, राधा पब्लिकेशन, दिल्ली
40. समकालीन कविता : प्रकृति और परिवेश– डॉ. रतनकुमार पांडेय, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
41. साठोत्तरी कविता : विद्रोही प्रतिमान– डॉ. रतनकुमार पांडेय, अनंग प्रकाशन, दिल्ली

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र
प्रश्न पत्र 14 : विशेष स्तर
हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकास

उद्देश्य :–

छात्रों को

1. हिंदी भाषा का उद्भव एवं विकास तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का परिचय देना।
2. आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ और उनके वर्गीकरण से अवगत कराना।
3. भारतीय आर्य भाषाओं के ऐतिहासिक विकास क्रम की जानकारी देना।
4. हिंदी बोलियों का वर्गीकरण तथा क्षेत्र से परिचित कराना।
5. हिंदी का व्याकरणिक स्वरूप और विकास की जानकारी देना।
6. लिपि विज्ञान की उपयोगिता स्पष्ट करना।
7. हिंदी प्रचार एवं प्रसार के आंदोलन की जानकारी देना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन
5. परिचर्चा।
6. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

1. **हिंदी भाषा का उद्भव एवं विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–** प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ – वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत सामान्य परिचय, मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ :– पालि, प्राकृत, शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्धमागधी, पैशाची, अपभ्रंश सामान्य परिचय।

   श्रेयांक/कर्मांक = 01

2. **आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ और उनका वर्गीकरण–** हार्नली, ग्रियर्सन (अंतिम वर्गीकरण) चटर्जी और हरदेव बाहरी द्वारा किया गया वर्गीकरण। आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का सामान्य परिचय।

3. **हिंदी बोलियों का वर्गीकरण तथा क्षेत्र–** अपभ्रंश (अवहट्ट सहित) और पुरानी हिंदी का संबंध, पूर्वी हिंदी व पश्चिमी हिंदी की तुलना, खड़ीबोली, ब्रज और अवधी की व्याकरणिक विशेषताएँ।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

4. **हिंदी का व्याकरणिक स्वरूप और विकास :–** रूप रचना– लिंग, वचन और कारक–व्यवस्था के संदर्भ में हिंदी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया रूप तथा अव्ययों का विकास ।
हिंदी का शब्द निर्माण :– उपसर्ग, प्रत्यय, समास।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

5. **लिपि विज्ञान :–** लिपि का उद्‌भव और विकास, खरोष्ठी और ब्राह्‌मी लिपि। देवनागरी लिपि – उद्‌भव और विकास।
6. **हिंदी प्रसार के आंदोलनः** प्रमुख व्यक्तियों तथा संस्थाओं का योगदान, राजभाषा के रूप में हिंदी, राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथः

1. भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान – डॉ. राजमल बोरा
3. भाषा विज्ञान की भूमिका–सैद्धांतिक विवेचन–डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा
4. भाषा विज्ञान के सिद्धांत – डॉ. त्रिलोचन पांडेय
5. भाषा विज्ञान– सैद्धांतिक विवेचन – रवींद्र श्रीवास्तव
6. भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा – द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
7. भाषा विज्ञान और भाषाशास्त्र – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
8. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा – डॉ. केशवदेव रूपाली
9. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा – डॉ. विश्वदेव त्रिगुणायत
10. भाषा विज्ञान की भूमिका – आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा
11. सामान्य भाषा विज्ञान – डॉ. बाबूराम सक्सेना
12. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. कृपाशंकर सिंह
13. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिध्दांत – डॉ. रामकिशोर शर्मा
14. भाषा और भाषा विज्ञान – डॉ. तेजपाल चौधरी
15. भाषा–ब्लूमफील्ड (अनुवादक– डॉ. विश्वनाथ प्रसाद)
16. हिंदी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी
17. हिंदी भाषा का उद्भव और विकास– डॉ. उदयनारायण तिवारी
18. हिंदी का उद्भव, विकास और रूप – डॉ. हरदेव बाहरी
19. हिंदी की ग्रामीण बोलियाँ – डॉ. हरदेव बाहरी
20. हिंदी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप– डॉ. अंबाप्रसाद'सुमन'
21. हिंदी भाषा – कैलाशचंद्र भाटिया
22. हिंदी भाषा का इतिहास – डॉ. भोलानाथ तिवारी
23. भारतीय लिपियों की कहानी – गुणाकर मुले
24. नागरी लिपि रूप और सुधार – मोहन ब्रिज
25. नागरी लिपि का उद्भव और विकास– डॉ. ओमप्रकाश भाटिया
26. नागरी की लिपि संरचना – डॉ. भोलानाथ तिवारी
27. भारत की भाषाएँ – डॉ. राजमल बोरा
28. मैत्रेत्री पुष्पा के उपन्यासों में नारी उत्पीड़न की समस्याएँ– डॉ. साधना भंडारी, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
29. हिंदी भाषा का विकासात्मक इतिहास– डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
30. हिंदी भाषा का इतिहास और स्वरूप – डॉ. राममूर्ति शर्मा
31. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. केशवदत्त रूपाली
32. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा की भूमिका– त्रिलोचन पांडेय
33. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा का स्वरूप विकास – डॉ. देवेंद्र प्रताप सिंह

३४. भाषा विज्ञान और हिंदी – डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'
३५. भाषा शास्त्र तथा हिंदी भाषा की रूपरेखा – डॉ. देवेंद्रकुमार शास्त्री
३६. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. राजमणि शर्मा
३७. भाषा विज्ञान प्रवेश और हिंदी भाषा– डॉ. भोलानाथ तिवारी
३८. अभिनव भाषा विज्ञान – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
३९. आधुनिक भाषा विज्ञान – कृपाशंकर सिंह/चतुर्भुज सहाय

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र
प्रश्न पत्र 15 : विशेष स्तर – हिंदी साहित्य का इतिहास
(आधुनिक काल)

उद्देश्य :–

छात्रों को

1. हिंदी गद्य के अविर्भाव के प्रधान कारणों, परिस्थितियों का
2. परिचय देना।
3. विषयवस्तु, भाषाशैली, शिल्प, विचारधारा, प्रभाव ग्रहण आदि के परिप्रेक्ष्य में प्रवृत्तियों को समझाते हुए हिंदी की प्रमुख गद्य विधाओं के विकासक्रम से परिचित कराना तथा प्रमुख गद्यकारों का परिचय देना।
4. आधुनिक हिंदी कविता के विकास के प्रमुख चरणों की प्रवृत्तियों, उपलब्धियों तथा सीमाओं से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग।
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन
5. परिचर्चा।
6. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान

पाठ्यक्रम

(क) हिंदी गद्य का निर्माण

1. हिंदी गद्य के आविर्भाव के लिए प्रेरक परिस्थितियाँ, 1857 की राज्य क्रांति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण।
2. भारतेंदुपूर्व काल के हिंदी गद्य का सामान्य परिचय – विशेषताएँ, प्रमुख गद्यकार, फोर्ट विलियम कॉलेज, ईसाई मिशनरी, आर्य समाज, ब्राह्मो समाज आदि का योगदान और हिंदी गद्य।
3. भारतेंदुयुगीन गद्य– साहित्य का स्वरूप और विशेषताएँ।
4. द्विवेदीयुगीन हिंदी साहित्य – साहित्य का स्वरूप और सामान्य विशेषताएँ, साहित्य विषयक मान्यता, राष्ट्रीय भावना, सुधारवादी दृष्टि, भाषा सुधार।

सूचना – उपर्युक्त चार विषय केवल स्वाध्याय के लिए है।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

अध्ययनार्थ विषय–

(ख) हिंदी गद्य विधाओं का विकास :

1. **हिंदी उपन्यास साहित्य का विकास** : प्रेमचंदपूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, स्वातंन्र्योत्तर युग(संबंधित युग के उपन्यास साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय) प्रमुख उपन्यासकारों का विशेष परिचय : प्रेमचंद, जैनेंद्रकुमार, हजारीप्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, यशपाल, वृंदावनलाल वर्मा, अमृतलाल नागर, फणीश्वरनाथ रेणु, रामदरश मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, राही मासूम रज़ा, श्रीलाल शुक्ल, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती ।
2. **हिंदी कहानी साहित्य का परिचय** : प्रेमचंदपूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, स्वातंन्र्योत्तर युग, प्रमुख कहानी आंदोलन बीसवीं सदी तक, (संबंधित युग के कहानी साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय) प्रमुख कहानीकारों का विशेष परिचय : प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्रकुमार, कमलेश्वर, उषा प्रियंवदा, ज्ञानरंजन, उदय प्रकाश।
3. **हिंदी नाटक और रंगमंच का उद्भव और विकास** : भारतेंदुपूर्व युग, भारतेंदु युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर युग, स्वातंन्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग (संबंधित युग के नाट्य साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय) प्रमुख नाटककारों का विशेष परिचय : भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, जगदीशचंद्र माथुर, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण मिश्र, मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, शंकर शेष, सुरेंद्र वर्मा।
4. **हिंदी निबंध का इतिहास** : भारतेंदुपूर्व युग, भारतेंदु युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग, स्वातंन्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग (संबंधित युग के निबंध साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय) प्रमुख निबंधकारों का विशेष परिचय : पं. प्रतापनारायण मिश्र, आ. रामचंद्र शुक्ल, आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, हरिशंकर परसाई।
5. **हिंदी की अन्य गद्य विधाएँ–** एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रासाहित्य, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

(ग) आधुनिक हिंदी काव्य का विकास :

1. **भारतेंदुयुगीन कविता** : सामान्य प्रवृत्तियाँ, भारतेंदुयुगीन प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय – भारतेंदु हरिश्चंद्र, पं. बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

2. **द्विवेदीयुगीन हिंदी कविता** : सामान्य प्रवृत्तियाँ द्विवेदी युगीन प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय – मैथिलीशरण गुप्त, पं. श्रीधर पाठक

3. **राष्ट्रीय काव्यधारा** : सामान्य प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय – माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर'
4. **छायावादी कविता** : उद्भव के कारण, सामान्य प्रवृत्तियाँ, सीमाएँ प्रमुख छायावादी कवियों का सामान्य परिचय – पंत, प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा।
5. **प्रगतिवादी कविता** : उद्भव के कारण, सामान्य प्रवृत्तियाँ, सीमाएँ, प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय – नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

6. **प्रयोगवादी कविता** : उद्भव के कारण, सामान्य प्रवृत्तियाँ तथा प्रमुख कवि।
7. **नई कविता** : सामान्य प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय –अज्ञेय, मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय।
8. **साठोत्तरी कविता सामान्य प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय** – धूमिल, दुष्यंत कुमार, लीलाधर जगुडी, केदारनाथ सिंह, चंद्रकांत देवताले, मंगलेश डबराल।
9. **समकालीन कविता की विशेषताएँ और प्रमुख कवि।**

श्रेयांक/कर्मांक = 01

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथः

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – आ. रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – सपां. डॉ. नगेंद्र
3. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
4. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
5. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
6. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. श्यामचंद्र कपूर (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)
7. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
8. हिंदी साहित्य और उसकी प्रवृत्तियाँ – डॉ. गोविंदराम शर्मा
9. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. जयकिशनप्रसाद खंडेलवाल
10. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास – बाबू गुलाबराय
11. आधुनिक साहित्य का इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
12. हिंदी साहित्य की भूमिका – डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
13. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. रामकुमार वर्मा
14. हिंदी गद्य : उद्भव और विकास – डॉ. उमेश शास्त्री
15. हिंदी साहित्य : एक परिचय – डॉ. त्रिभुवन सिंह
16. हिंदी साहित्य और संवेदना का इतिहास– डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
17. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
18. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य – रामरतन भटनागर
19. हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ – डॉ. शिवकुमार शर्मा
20. हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास – डॉ. सभापति मिश्र
21. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. माधव सोनटक्के
22. हिंदी साहित्य का अद्यतन इतिहास – डॉ. मोहन अवस्थी
23. हिंदी साहित्य का सही इतिहास – डॉ. चंद्रभानु सोनवणे/ डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
24. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास – डॉ. सुमन राजे
25. हिंदी साहित्य की नवीन विधाएँ – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
26. हिंदी साहित्य का इतिहास : नए विचार नई दिशाएँ – डॉ. सुरेशकुमार जैन
27. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. सज्जनराम केणी
28. हिंदी साहित्य – डॉ. धर्मवीर भारती
29. मैथिलीशरण गुप्त के खंडकाव्यों का अनुशीलन–डॉ. योगिता हिरे
30. यशपाल के उपन्यासः गवेषणात्मक अध्ययन– डॉ. अनिता नेरे
31. साठोत्तरी हिंदी कथासाहित्य : स्त्री विमर्श– संपा. डॉ. अनिता नेरे/डॉ. योगिता हिरे
32. मार्कंडेय का कथा साहित्य और ग्रामीण सरोकार– डॉ. जिभाऊ

मोरे
33. आलोचना और आलोचना– देवीशंकर अवस्थी, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–2
34. अंतिम दशक की हिंदी कहानियाँ संवेदना और शिल्प– डॉ. नीरज शर्मा, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, दिल्ली–2
35. हिंदी नाटक और रंगमंच– संपा. धीरेंद्र शुक्ल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 337, चौड़ा रास्ता, जयपुर–3
36. हिंदी साहित्य संक्षिप्त इतिवृत्त– शिवकुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–2
37. अंतिम दो दशकों का हिंदी साहित्य– संपा. मीरा गौतम, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–2
38. हिंदी नाटक आज तक– डॉ. वीणा गौतम, शब्द सेतु, ए–139, गली नं. 3, कबीर नगर, दिल्ली– 94
39. बीसवीं शताब्दी का हिंदी साहित्य– विजयमोहन सिंह, राजकमल प्रका. प्रा लि., 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र
प्रश्न पत्र 16 : विशेष स्तर – वैकल्पिक
(सूचनाः क,ख,ग में से किसी एक विषय का अध्ययन करना है)
(क) भारतीय साहित्य

उद्देश्य :–

छात्रों को

1. हिंदी साहित्य के आखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य से परिचित कराना।
2. हिंदीत्तर भाषाओं के साहित्य का स्थूल परिचय देना।
3. भारतीय साहित्य में व्यक्त भारतीयता की पहचान कराना ।
4. हिंदी में अनूदित साहित्य परिचय देना।
5. साहित्यिक अनुवाद के आस्वादन एवं मूल्यांकन को विकसित करना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन
5. विविध भाषाओं के साहित्यकारों से साक्षात्कार।
6. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषय :

1. भारतीय साहित्य का स्वरूप
2. भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ
3. भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब
4. भारतीयता और समाजशास्त्र
5. हिंदी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

अध्ययनार्थ साहित्य कृतियाँः

1. **उपन्यास– बारोमास : सदानंद देशमुख,**
   अनुवादकः डॉ. दामोदर खडसे.(मराठी)
   प्रकाशक : साहित्य अकादमी, रवींद्र भवन,
   35– फिरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली –110001
   श्रेयांक/कर्मांक = 02

2. **नाटक– नागमंड़ल : डॉ. गिरीश कर्नाड(कन्नड)**
अनुवादकः बी. आर. नारायण,
प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, लोदी रोड,
नई दिल्ली–110001, संस्करण – 1991

श्रेयांक/कर्मांक = 01

3. **आत्मकथा– खानाबदोश : अजीत कौर (पंजाबी)**
अनुवादक : के. ए. जमुना, प्रकाशकः राजपाल एण्ड सन्ज़,
कश्मीरी गेट, दिल्ली– 110 006, संस्करण – 1991

श्रेयांक/कर्मांक = 01

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथः

1. भारतीय साहित्य – संपा. डॉ. नगेंद्र
2. आज का भारतीय साहित्य – संपा. साहित्य अकादमी
3. हिंदी साहित्य के विकास में दक्षिण का योगदान – संपा. रेड्डी राव/अप्पल राजु
4. मराठी साहित्य : परिप्रेक्ष्य – संपा. डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर
5. बंगला साहित्य का इतिहास – डॉ. बॅनर्जी
6. भारतीय साहित्यकारों से साक्षात्कार – डॉ. रणवीर रांग्रा
7. भारतीय साहित्य – डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय/डॉ. प्रमिला अवस्थी अशिश प्रकाशन, कानपुर
8. भारतीय साहित्याची संकल्पना – संपा. द.दि. पुंडे /डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर अभिनंदन ग्रंथ पद्मजा घोरपडे प्रतिया प्रकाशन, पुणे
9. भारतीय साहित्य विमर्श – संपा. रामजी तिवारी परिदृश्य प्रकाशन, मुबंई
10. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास – संपा. डॉ. नगेंद्र,
11. हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, नई दिल्ली
12. भारतीयता की पहचान – डॉ. विद्यानिवास मिश्र
13. कैसी है यह भारतीयता – यू. आर. अनंतमूर्ति
14. संस्कृति की उत्तरकथा – शंभुनाथ
15. भारतीय साहित्य – डॉ. रामछबीला त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
16. भारतीय साहित्य : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य – इंदुनाथ चौधरी (वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली)
17. समकालीन भारतीय साहित्य (पत्रिका)
18. भारतीय साहित्य : अवधारणा, स्वरुप और समस्याएँ – के. सच्चिदानंद (वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली)
19. भारतीय साहित्य की भूमिका– रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1–बी, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–2

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र
प्रश्न पत्र 16 : विशेष स्तर – वैकल्पिक
(ख) लोकसाहित्य

उद्देश्य :–

छात्रों को

1. लोकसाहित्य के स्वरूप तथा उसके अध्ययन के महत्व से परिचित कराना।

2. लोकसाहित्य की विविध विधाओं की जानकारी देना तथा लोकजीवन में उसकी व्यापकता समझाना।
3. लोकसाहित्य का महत्व समझाकर उसके विशेष अध्ययन के लिए प्रेरित करना।
4. महाराष्ट्र के लोकसाहित्य से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन
5. लोक–साहित्यकारों से साक्षात्कार।
6. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषय :

1. **'लोक' शब्द की व्युत्पत्ति, स्वरूप, लोकसाहित्य का स्वरूप** – परिभाषाएँ तथा विशेषताएँ, लोकसाहित्य और शिष्ट साहित्य में साम्य–भेद, लोकवार्ता का स्वरूप, लोकसाहित्य का महत्व।
2. **लोकसाहित्य और अन्य ज्ञानशाखाओं का परस्पर संबंध–** इतिहास, पुरातत्व, मानव विज्ञान, समाज विज्ञान, मनोविज्ञान, भाषा विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र ।
3. **लोकसाहित्य संकलनः** उद्देश्य, संकलन की पद्धतियाँ, संकलनकर्ता की क्षमताएँ, संकलनकर्ता के लिए उपयुक्त साधन सामग्री, संकलनकर्ता की समस्याएँ तथा समाधान।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

4. **लोकगीत** : परिभाषाएँ, विशेषताएँ और प्रेरणा स्रोत, लोकगीत और शिष्टगीत में अंतर, लोकगीतों के वर्गीकरण की पद्धतियाँ, लोकगीतों का परिचय– सोहर, मुंडन, विवाह, गौना, होली, सावनगीत आदि।

5. **लोकगाथा** : परिभाषाएँ एवं स्वरूप, लोकगाथा के उत्पत्तिविषयक सिद्धांत, किसी एक लोकगाथा का सामान्य परिचय– ढोला–मारू रा दूहा, नल–दमयंती, लैला–मजनू, हीर–राँझा, सोहनी–महीवाल, लोरिक–चंदा आदि।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

6. **लोककथा** : परिभाषा एवं स्वरूप, विशेषताएँ, लोककथा में अभिप्राय का महत्व, लोककथा के उत्पत्तिविषयक सिद्धांत, लोककथाओं का वर्गीकरण।
7. **लोकनाट्य** : परिभाषा एवं स्वरूप, विशेषताएँ, लोकनाट्य और शास्त्रीय नाटक में अंतर, लोकनाट्यों का परिचय– रामलीला, रासलीला, कीर्तन, यक्षगान, जात्रा, भवाई, ख्याल, माँच, नौटंकी, कुचिपुडी।
8. **महाराष्ट्र का लोकनाट्य–** तमाशा, गोंधळ, लावनी, पोतराज, सुंबरान, वासुदेव, भारूड, लळित, दशावतार, पोवाडा, कीर्तन आदि।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

9. **प्रकीर्ण लोकसाहित्य** : मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ,मुकरियाँ, सूक्तियाँ, ढकोसले, चुटकुले, मंत्र, टोना आदि का परिचय।
10. **लोकसाहित्य का कलापक्ष** : भावव्यंजना, रसपरिपाक, भाषा, अलंकार–योजना, छंद–विधान, प्रतीकात्मकता आदि दृष्टियों से विवेचन ।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथः

1. भारतीय लोकसाहित्य – डॉ. श्याम परमार
2. लोकसाहित्य की भूमिका – डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
3. लोकसाहित्य : सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. श्रीराम शर्मा
4. लोक साहित्य के प्रतिमान–डॉ. कुंदनलाल उप्रैति
5. खडीबोली का लोकसाहित्य – डॉ. सत्यगुप्त
6. लोकसाहित्य का विज्ञान– डॉ. सत्येंद्र
7. लोकवार्ता और लोकगीत – डॉ. सत्येंद्र
8. लोकसाहित्य का अध्ययन –डॉ. त्रिलोचन पांडेय
9. लोकसाहित्य – प्राचार्य डॉ. बापूराव देसाई, विकास प्रकाशन, 110/138 मिश्रा पॅलेश, जवाहर नगर, कानपुर–208012

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र
प्रश्न पत्र 16 : विशेष स्तर – वैकल्पिक
(ग) अनुसंधान प्रक्रियाः स्वरूप और क्षेत्र

उद्देश्य :–

छात्रों को

1. अनुसंधान प्रक्रिया का स्वरूप एवं उपयोजन की जानकारी देना।
2. अनुसंधान प्रक्रिया के विविध आयामों से परिचित कराना।
3. अनुसंधान प्रक्रिया के स्वरूप एवं उपयोजन की जानकारी देना।
4. अनुसंधान प्रक्रिया के संदर्भ में आवश्यक तथ्यों से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों/संगणक तथा इंटरनेट का प्रयोग
4. शैक्षिक अध्ययन यात्रा का आयोजन
5. विविध समाचार–पत्रों के कार्यालयों में अध्ययन यात्रा।
6. पत्रकारिता के क्षेत्र से जुड़े विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषयः

1. **अनुसंधान का स्वरूप** : अनुसंधान के लिए प्रयुक्त विभिन्न शब्द एवं उनका औचित्य, अनुसंधान की विविध परिभाषाएँ और उनका विश्लेषण, अनुसंधान के उद्देश्य, अनुसंधान की विवेचन पद्धति, वस्तुनिष्ठता, तर्कसंगति, प्रमाणबद्धता ।
2. **अनुसंधान** : परिभाषा एवं स्वरूप

श्रेयांक/कर्मांक = 01

3. **अनुसंधान और आलोचना।**
4. **अनुसंधान के मूल तत्व।**
5. **अनुसंधान के प्रकार** : साहित्यिक, साहित्येत्तर, दोनों में साम्य–वैषम्य, अंतःसंबंध, साहित्यिक अनुसंधान के प्रकार– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, अंतर्विद्याशाखीय अनुसंधान का सामान्य परिचय ।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

6. **अनुसंधान की प्रक्रिया** : विषय–चयन, सामग्री संकलन,हस्तलेख–संकलन एवं उपयोगिता, सामग्री का विश्लेषण, विवेचन, निष्कर्ष। अनुसंधानकर्त्ता एवं शोध निर्देशक के गुण। भाषा और साहित्य का अध्यापनः अध्यापन के सूत्र।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

7. **शोध–प्रबंध लेखन प्रणाली** : शोध प्रबंध शीर्षक, निर्धारण, रूपरेखा, भूमिका–लेखन, अध्याय–विभाजन, संदर्भ उल्लेख, पाद टिप्पणी, सहायक ग्रंथ सूची, परिशिष्ट, टंकन, वर्तनी सुधार।
8. **अनुसंधान कार्य घटक और पाठालोचन** : अनुसंधान के घटक, पाठालोचन के मुख्य सिद्धांत।

श्रेयांक/कर्मांक = 01

कुल श्रेयांक/कर्मांक = 04

संदर्भ ग्रंथ :

1. शोध प्रविधि : डॉ. विनयमोहन शर्मा
2. अनुसंधान की प्रक्रियाः डॉ. सावित्री सिन्हा,डॉ. विजयेंद्र स्नातक
3. अनुसंधान का विवेचन : डॉ. उदयभानु सिंह
4. साहित्य सिद्धांत और शोध : डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित
5. हिंदी शोध तंत्र की रुपरेखा : डॉ. मनमोहन सहगल
6. शोध प्रक्रिया एवं विवरणिका : डॉ. सरनान सिंह शर्मा
7. शोध स्वरुप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधिः डॉ. वैजनाथ सिंहल
8. शोध विज्ञान कोशः डॉ. दु.का.संत,पुणे विद्यार्थी गृह प्रका., पुणे
9. तुलनात्मक साहित्य : संपादक डॉ. राजमल बोरा
10. अनुवाद क्या है ? : संपादक डॉ. राजमल बोरा
11. अनुवाद विज्ञान : डॉ. भोलनाथ तिवारी
12. अनुवाद सिद्धांत : : डॉ. जी. गोपीनाथम
13. भारतीय साहित्य की भूमिका : डॉ. रामनिलास शर्मा
14. भारतीय साहित्याची संकल्पना : संपादक डॉ. द.दि. पुंडे
15. भाषा और समाज : डॉ. रामविलास शर्मा
16. साहित्य और इतिहास दृष्टि : डॉ. मैनेजर पांडेय
17. साहित्य कोश भाग 1: सं.डॉ. धीरेंद्र वर्मा, ज्ञानमंडल, वाराणसी
18. उत्तर आधुनिकता साहित्य विमर्श : डॉ. सुधीर पचौरी
19. उत्तर आधुनिकता, संचरचनावाद और डॉ. गोपीवेद नारंग, साहित्य प्राच्य काव्यशास्त्र अकादमी, नई दिल्ली
20. हिंदी साहित्य मे विविध वाद डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल, लोकभारती, इलाहाबाद
21. साठोत्तरी हिंदी और मराठी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन : संपा. डॉ. अनिता नेरे, शांति सरवर प्रका., रोहतक, हरियाणा।
22. Intr oduction to Research : T. Hallway.